Date 15/04/2024
Page 1

Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं विषय- हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक साहित्य सागर

पाठ-1 'बात अठन्नी की' (कहानी) लेखक - सुदर्शन

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या छह पर दिए पाठ-एक 'बात अठन्नी की' नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चा ! आप अपना-अपना पुस्तक 'साहित्य सागर' में दी गई पहली कहानी 'बात अठन्नी की' खोल लें और अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर पुस्तिका भी निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर आप पाठ को सुनकर एवं समझकर ही दे पाएँगे।

आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो! पाठ को आगे समझने से पहले आइए यह जान लेते हैं कि पिछले सप्ताह हमने क्या पढ़ा था।

रसीला इंजीनियर बाबू जगत सिंह के यहाँ नौकर था। उसका परिवार गाँव में रहता था। परिवार में बूढ़े पिता, पत्नी और तीन बच्चे थे। उन सबकी ज़िम्मेदारी रसीला पर थी। रसीला को दस रुपए मासिक वेतन मिलता था जिससे परिवार का गुजारा नहीं चल पाता था। बार-बार वेतन बढ़ाने

की प्रार्थना करने पर भी बाबू जगत सिंह वेतन बढ़ाने को राजी न हुए।

बाबू जगतसिंह के पड़ोसी जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार मियाँ रमज़ान से रसीला की गहरी मित्रता हो गई। दोनों घंटों साथ बिताते। एक-दूसरे के सुख-दुःख के सच्चे साथी थे। एक बार रसीला के बच्चे बीमार हो गए। इलाज के लिए रुपया नहीं था। इसलिए रसीला बहुत दुःखी रहने लगा। मालिक ने भी पेशगी देने से इन्कार कर दिया। रमज़ान के पूछने पर उसने रमज़ान को सारी बात बता दी। तब रमज़ान ने रसीला की मदद की। रसीला के बच्चे स्वस्थ हो गए। उसने रमज़ान के पैसे भी चुका दिए केवल आठ आने बाकी रह गए। एक बार इंजीनियर बाबू कमरे में रिश्वत ले रहे थे। रसीला ने सुना तो वह सोचने लगा कि यह रुपया कमाने का कितना आसान तरीका है। मैं पूरे दिन मेहनत-मज़दूरी करता हूँ तब दस रुपए हाथ आते हैं। रसीला ने यह बात रमज़ान को बताई। रमज़ान से उसे पता चला कि शेख साहब भी कुछ कम न थे, वे इंजीनियर साहब के भी गुरु हैं।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने यहीं तक पढ़ा था। अब पाठ को आगे बढ़ाते हुए इसे भी विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे।

रसीला ने सोचा कि बाबू साहब ने उसे इतनी बार पैसे रखने के लिए दिए परन्तु उसने धर्म नहीं छोड़ा अर्थात् बेईमानी नहीं की। यदि वह अब तक एक-एक आना भी उड़ाता तो आज उसके पास बहुत रकम जुड़ जाती। तभी इंजीनियर साहब ने रसीला को आवाज़ लगाकर पाँच रुपए की मिठाई लाने को कहा। रसीला ने हलवाई से साढ़े चार रुपए (चार रुपए, पच्चास पैसे) की मिठाई खरीदी और अठन्नी रमज़ान को लौटाकर अपना कर्ज़ चुका दिया। मिठाई लेकर जब रसीला बाबू जगतसिंह के पास आया तो वे मिठाई देखकर चौंक गए। बाबू साहब को रसीला द्वारा लाई मिठाई पाँच रुपए से कम की लगी। उन्होंने

रसीला से पूछा कि क्या यह मिठाई पाँच रुपए की है? यह सुनकर रसीला घबरा गया। उसके चेहरे का रंग उड़ गया। वे समझ गए कि रसीला ने ज़रूर थोड़ी बेईमानी की है। रसीला के बार-बार झूठ बोलने पर बाबू जगत सिंह ने रसीला के गाल पर एक तमाचा मारा। उन्होंने रसीला को हलवाई के पास चलकर सच व झूठ का पता लगाने की धमकी दी। बाबू जी की उसे हलवाई के पास जाने की बात सुनकर रसीला के पास अब कोई रास्ता नहीं बचा था उसने अपना गुनाह (अपराध) कबूल (स्वीकार) कर लिया। वह इस अपराध के लिए बाबू जगत सिंह से माफ़ी माँगने लगा। रसीला की बात सुनकर इंजीनियर साहब को बहुत क्रोध आ गया। उन्होंने निष्ठुरता से रसीला को खूब पीटा और उसे घसीटते हुए थाने ले जाकर पुलिस के हवाले कर दिया। वहाँ एक सिपाही के हाथ पर पाँच रुपए रखकर बाबू साहब बोले कि इससे मनवा लेना। वे रसीला को पीटने के लिए पुलिस को पाँच रुपए रिश्वत के रूप में देते हैं। यहाँ जगत सिंह निर्दयी व क्रूर दिखाई देते हैं।

अगले दिन रसीला का मुकदमा शेख सलीमुद्दीन की कचहरी में पेश हुआ। उसने तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लिया क्योंकि वह पेशे से चोर नहीं था। परिस्थितिवश उससे ऐसा हो गया था। बाबू जगत सिंह को काली कमाई करते देख उसके मन में भी लालच आ गया था। रसीला चाहता तो कई बहाने बनाकर स्वयं को बेकसूर साबित कर सकता था। वह चाहता तो कह सकता था कि यह मेरे खिलाफ़ षडयन्त्र है। मैं यहाँ नौकरी छोड़ना चाहता हूँ इसलिए बाबू साहब हलवाई के साथ मिलकर मुझे फँसा रहे हैं लेकिन रसीला ने ऐसा नहीं किया क्योंकि एक और अपराध करने का साहस अर्थात् झूठ बोलने का साहस वह नहीं कर पाया। उसकी आँखें खुल गई थीं। वह ईमानदारी से जीवन जीने तथा झूठ का सहारा न लेने का महत्त्व समझ चुका था।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-1 'बात अठन्नी की')
Date 15/04/2024
Page 4

रसीला ने हाथ जोड़कर बोला हुज़ूर यह मेरा पहला अपराध है, माफ़ कर दीजिए आगे फिर ऐसी गलती न होगी।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए विराम देंगे एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न 1. बाबू जगत सिंह ने रसीला से क्या लाने को कहा?
प्रश्न 2. रसीला ने क्या बेईमानी की?
प्रश्न 3. रसीला के द्वारा गलती मान लेने पर बाबू जगत सिंह ने क्या किया?

बच्चो! प्रश्न लिखने के लिए दी गई अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। अब मैं आपको उन्हीं प्रश्नों के उत्तर बता रही हूँ, जो इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. बाबू जगत सिंह ने रसीला से पाँच रुपए की मिठाई लाने को कहा।
उत्तर 2. रसीला पाँच रुपए की जगह साढ़े चार रुपए की मिठाई लाया और अठन्नी रमज़ान को देकर अपना कर्ज़ चुका दिया।
उत्तर 3. रसीला के द्वारा गलती मान लेने पर बाबू जगत सिंह ने उसे निर्दयता से खूब पीटा फिर घसीटते हुए थाने ले जाकर पुलिस के हवाले कर दिया। सिपाही के हाथ में पाँच रुपए रखकर किसी भी तरह गुनाह कबूल करवाने के लिए कहा।

बच्चो! अब पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ना आरंभ करते हैं।

लेखक ने शेख साहब पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि शेख साहब न्यायप्रिय आदमी थे। 'न्यायप्रिय' शब्द शेख साहब के लिए व्यंग्य रूप में प्रयुक्त हुआ है क्योंकि न्याय करने में वे अपने विवेक (बुद्धि) का प्रयोग नहीं

करते थे। जो उन्हें रिश्वत दे देता था वे उसी के पक्ष में न्याय करके फैसला सुनाते थे। पैसों के लालच में वे अपना कर्तव्य और एक न्यायाधीश का धर्म भूल चुके थे। भारी रिश्वत लेकर उन्होंने रसीला को छह महीने की सज़ा सुना दी। किसी ने उन्हें एक दिन पहले रूमाल में एक हज़ार रूपए रिश्वत के रूप में दिए थे। अठन्नी के चोर को सज़ा देते समय शेख साहब न्यायप्रिय बन रहे थे। स्वयं हज़ारों की चोरी उन्हें नज़र नहीं आ रही थी।

फैसला सुनकर रमज़ान को बहुत क्रोध आया। वह सोचने लगा कि यह दुनिया न्याय नगरी नहीं अंधेर नगरी है। अर्थात् रमज़ान की नज़रों में यह फैसला नहीं अँधेर था। चोरी पकड़ी गई तो अपराध हो गया। असली अपराधी बड़ी-बड़ी कोठियों में बैठकर दोनों हाथों से धन बटोर रहे हैं। उन्हें कोई नहीं पकड़ता। बड़े-बड़े चोर जो नहीं पकड़े जाते हैं वे आराम से अपनी जिन्दगी गुज़ार लेते हैं परन्तु छोटी गलती पर गरीब को बड़ी सज़ा दी जाती है।

रमज़ान जब घर पहुँचा तो शेख साहब की एक दासी (नौकरानी) जो ऐसे आम लोगों का प्रतिनिधित्व कर रही हैं जो दूसरों के जले पर नमक छिड़कते हैं, ने पूछा कि रसीला का क्या हुआ। रमज़ान ने यह बताने पर कि छह महीने की कैद तो दासी ने कहा अच्छा हुआ। रसीला इसी योग्य था। रमज़ान ने गुस्से से कहा कि सिर्फ़ एक अठन्नी की तो बात थी। यह इंसाफ़ नहीं अंधेर है।

रात के समय जब हज़ार और पाँच सौ की रिश्वत लेने वाले बाबू जगत सिंह और शेख सलीमुद्दीन नरम गद्दों पर आराम की नींद ले रहे थे और केवल अठन्नी का चोर रसीला अपने इस अपराध के कारण छह महीने तक जेल की तंग एवं अंधेर कोठरी में सज़ा काट रहा था। गरीब रसीला को ज़रा सी बेईमानी करने पर पछतावा भी होता है पर उच्च वर्ग बिना पछतावे न्याय के नाम पर अन्याय करते हैं।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-1 'बात अठन्नी की')

Date 15/04/24
Page 6
[Last Page]

बच्चो ! आज हमारा यह पाठ समाप्त हो चुका है। आशा करती हूँ कि आपने इस पाठ को रुचि से पढ़ा एवं समझा होगा। सभी छात्र इस पाठ को दो-तीन बार ऊँचे स्वर में अवश्य पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ। इस कार्य को सभी छात्र पाठ की सहायता से साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

"बस पाँच सौ रुपए ! इतनी-सी रकम देकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं ? उनके कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (ii) रसीला उनकी बातचीत को सुनकर क्या समझ गया और क्या सोचने लगा ?

प्रश्न (iii) 'आप मेरा अपमान कर रहे हैं।' कथन से वक्ता का क्या संकेत था ? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (iv) उपर्युक्त पंक्तियों में समाज में व्याप्त किस बुराई की ओर संकेत किया गया है ? इस बुराई का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

धन्यवाद।